तराना आज़ादी का

नैल्सन मण्डेला की कहानी

लेखन: नील टॉंज

चित्र: टॉनी मौरिस

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

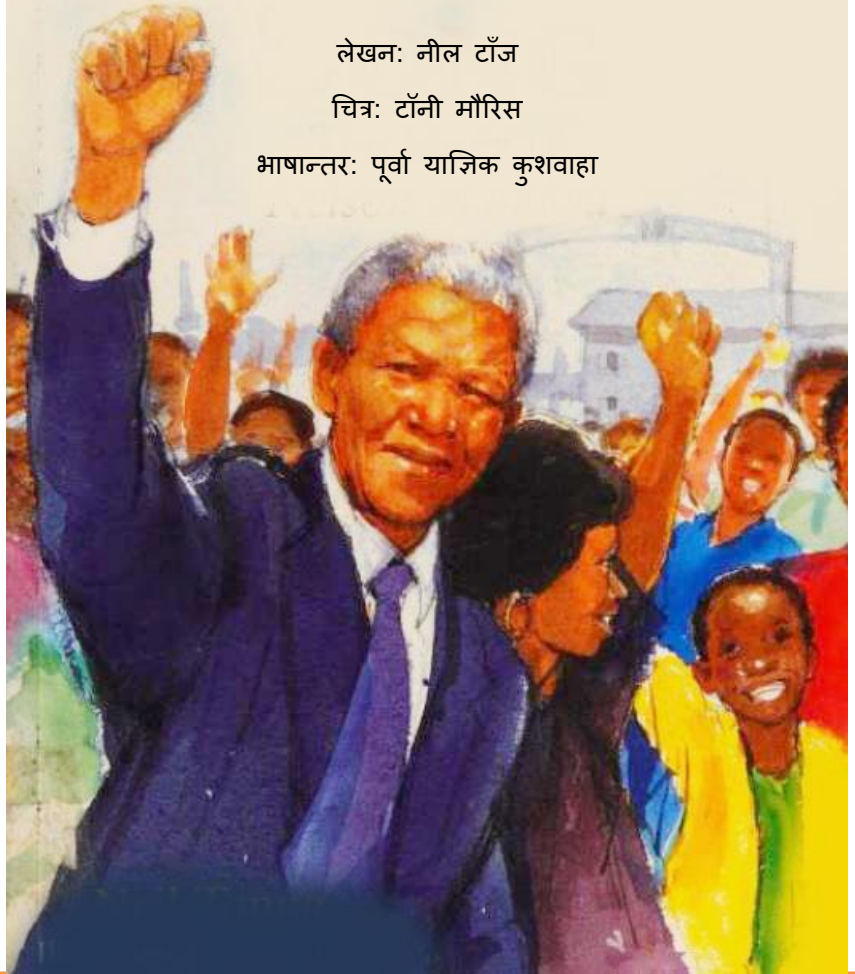

तराना आज़ादी का

नैल्सन मण्डेला की कहानी

लेखन: नील टॉज

चित्र: टॉनी मौरिस

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

तिथिक्रम

1918 - नैल्सन मण्डेला का ट्रांसकाई, दक्षिण अफ्रीका में 18 जुलाई को जन्म हुआ।

1939 - अध्ययन के लिए फोर्ट हैर विश्वविद्यालय में दाखिल हुए।

1942 - विटस्वॉटरसैण्ड विश्वविद्यालय में वकालत का अध्ययन शुरू किया।

1943 - अफ्रीकन नैशनल कांग्रेस से जुड़े और उसके विस्तार में मदद की।

1951 - मण्डेला बकील बने।

1956 - पाँच वर्ष बाद उन पर देशद्रोह का मुकदमा चला।

1960 - शार्पविल नरसंहार।

1961 - मण्डेला को गिरफ्तार किया गया और जल्द ही छोड़ भी दिया गया। पर साल भर बाद 1962 में फिर से कैद किया गया।

1990 - 11 फरवरी को मण्डेला को 28 वर्ष बाद कैद से रिहा किया गया।

1994 - दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में पहले स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के बाद वे राष्ट्रपति चुने गए।

2013 - 5 दिसम्बर को नैल्सन मण्डेला की मृत्यु।

अध्याय 1

वह तो एक हादसा भर था

"सियाबोंगा!"

सियाबोंगा ने फूलों की क्यारी से खरपतवार हटाना बन्द कर ऊपर देखा। दोपहर का समय था, सूरज की चकाचौंध से आँखों को बचाने उसने अपनी हथेली से छाया की।

"देखो तो मेरे पास क्या है!" सियाबोंगा को काम देने वाले डॉ. होप का दस वर्षीय बेटा क्रिस, पन्ने-सी हरी घास के मैदान पर भागे चला आ रहा था। घास पर छिड़काव करने वाले फौव्वारों से बचता-बचाता। फौव्वारे पानी के तरल हीरे हवा में बिखेर रहे थे।

क्रिस का चेहरा खुशी से दमक रहा था। उसने अपना नया गेमबॉय (कम्प्यूटर खिलौना) सियोबोंगा के हाथों में थमाया। ''बोलो, बोलो भी, क्या राय है तुम्हारी? है ना शानदार?''

सियाबोंगा ने कुदाली नीले-गुलमोहर की झाड़ से टिकाई, जिससे कुछ फूल कुचल गए। तब झिझकते हुए क्रिस के हाथों से गेमबॉय ले लिया।

''मास्टर होप, आप तो जानते ही हैं, मुझे काम रोकना नहीं चाहिए। आपके पिता नाराज़ हो जाएंगे,'' सियाबोंगा क्रिस से सिर्फ़ तीन बरस ही बड़ा था। पर क्रिस की दुनिया अमीर गोरों की थी जो दक्षिण अफ्रीका पर राज करते थे। जबकि सियाबोंगा जोहानसबर्ग के गिर्द बनी ग़रीब झोंपड़पट्टियों में एक से था।

"अरे बस एक मिनट पकड़ कर देखो तो, किसीको पता तक नहीं चलेगा," क्रिस ने ज़िद की।

सियाबोंगा ने इधर-उधर देखा। कोई नज़र नहीं आया। नीले-गुलमोहर की झाड़ उन्हें आड़ दे रही थी। सियाबोंगा की उंगलियाँ कांप रही थीं। ऐसी किसी चीज़ को ख़रीदने में उसका महीनों का वेतन लग जाता। वह सपने में भी उसे ख़रीदने की सोच नहीं सकता था। उसकी कमाई की ज़रूरत उसकी माँ को थी जो एलैक्ज़ैन्ड्रा की झोंपड़पट्टी में टिन के छत वाले एक कमरे में रहती थी।

"इससे क्या होता है क्रिस?" सियाबोंगा ने गेमबॉय अपने दोस्त की ओर बढ़ाया।

"देखो, मैं बताता हूँ। इसे दबाओ," क्रिस जोश और खीज से भर बोला। क्रिस ने गेमबॉय खींच कर लेना चाहा ही था कि वह सियाबोंगा के हाथों से फिसला और फट्ट की आवाज़ के साथ धरती पर गिरा, टूटा और बिखर गया। दोनों ही लड़के सकते में आ गए।

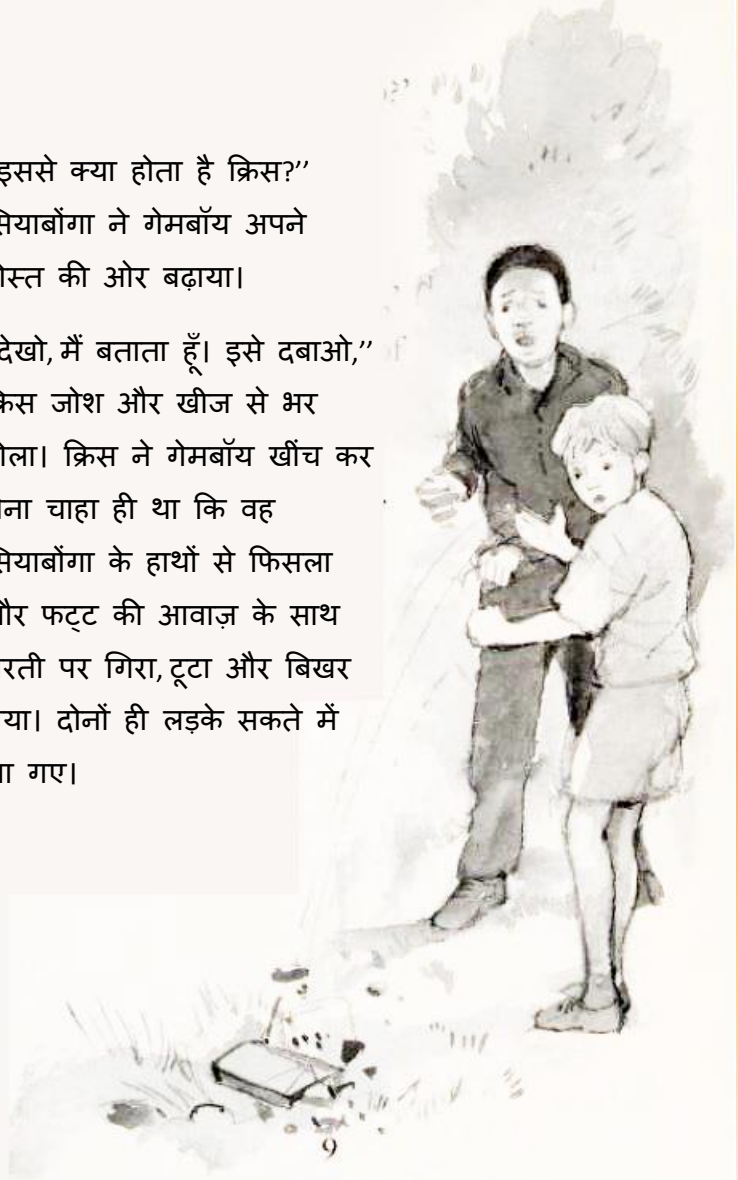

वे टूटे हुए गेमबॉय को हैरानी से देख रहे थे, इतने में ही झाड़ के पीछे से क्रिस के पिता की आवाज़ गूँजी। वे ख़तों का पुलिन्दा लिए आ रहे थे जब उन्होंने खिलौने के टूटने की आवाज़ सुनी।

"क्या हो रहा है क्रिस?" उन्होंने टूटे खिलौने को देखा, तब सियाबोंगा का चेहरा।

"डैड, डैड यह बस एक हा...," क्रिस ने खुलासा करने की कोशिश की। पर पिता ने उसे घर लौटने का हुक्म दिया तो वह हकला कर चुप हो गया।

"तुमसे तो मैं बाद में बात करूँगा क्रिस। मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ सियाबोंगा, तुम्हें काम करने के पैसे मिलते हैं, खेलने के लिए नहीं।"

क्रिस ने सिर झुका गेमबॉय के टुकड़े उठाए। वह भारी मन से घर की ओर चल दिया। कुछ ही देर में बरामदे की छाया में वह गुम हो गया।

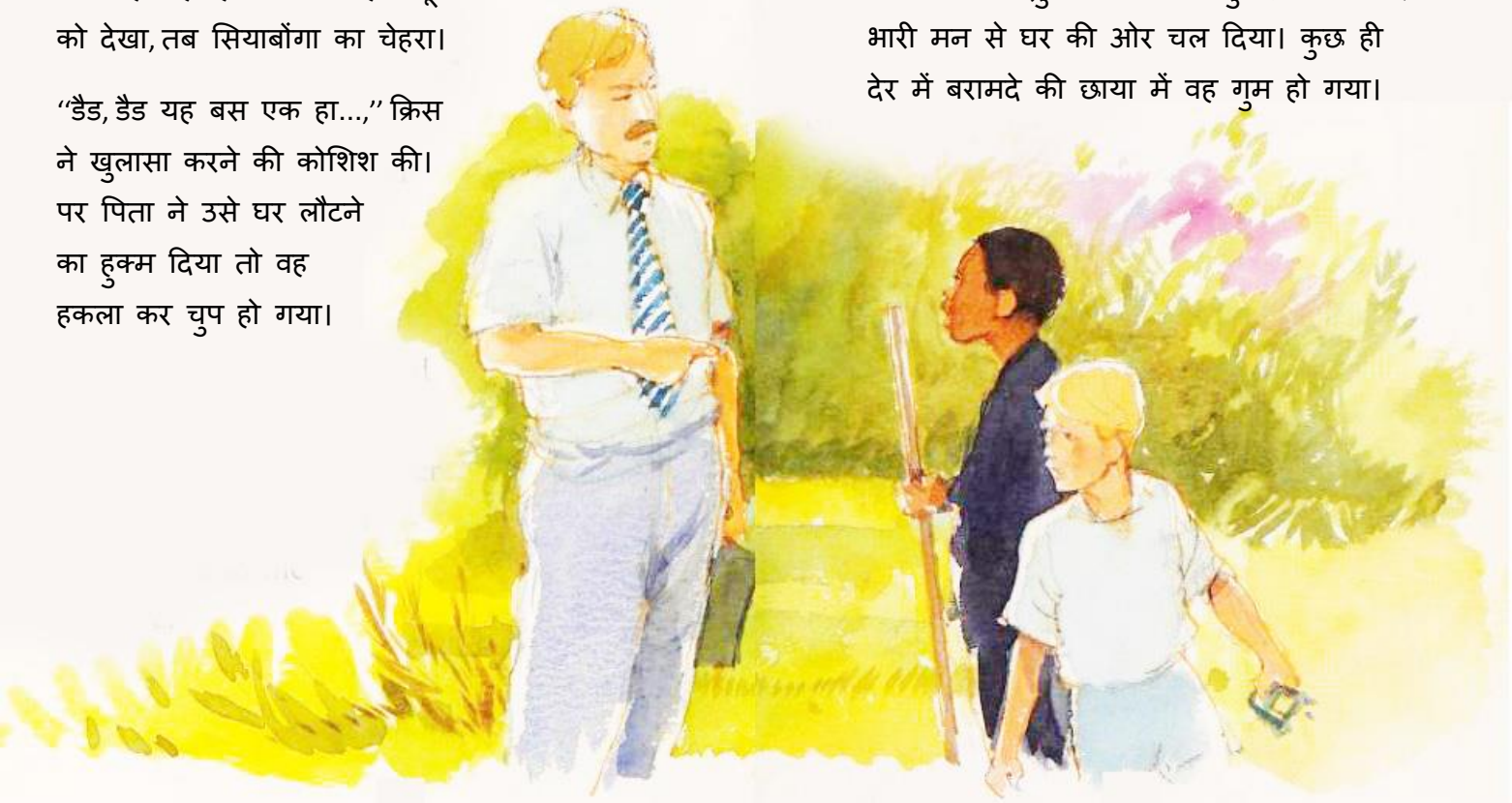

डॉ. एलन होप सिंयाबोंगा की ओर वापस मुड़े। उनका चेहरा सख़्त था।

''सियाबोंगा, तुमने मुझे बेहद निराश किया है। मैंने तुम्हें और तुम्हारे चाचा को काम पर रखा। मैं समय से पूरा भुगतान करता हूँ। मुझे अब सोचना होगा कि तुम्हें रखूँ या नहीं। यह पहली मर्तबा नहीं है कि...''

सियाबोंगा के पास अपनी सफ़ाई में कहने को कुछ था नहीं। क्रिस के पिता नाराज़ थे। पलट कर कुछ कहता तो उसका काम तो तमाम ही था, शायद चाचा का भी।

''माफ़ करें सर! मैंने जानबूझ कर यह नहीं किया,'' सियाबोंगा ने सिर झुकाए ही कहा। नज़रें उठाने की हिम्मत उसकी नहीं हुई।

''मैं बेहद नाख़ुश हूँ। क्या कदम उठाऊँ यह सोचना होगा।'' सियाबोंगा ने चोरी से नज़र उठा उनके चेहरे पर माफ़ी की कोई झलक तलाशने की कोशिश की। पर वह नदारद थी।

अध्याय 2

शायद हालात बदलें

सोने की कुठरिया में बोरे के टुकड़े पर बैठा सियाबोंगा चचा जोशुआ का चेहरा घूर रहा था।

"मुझे बेहद अफ़सोस है, पर मेरी कोई ग़लती नहीं थी।"

चचा उससे ख़फ़ा थे। वे अपना काम खोना नहीं चाहते थे। वे पचास बरस के हो चुके थे। नई नौकरी तलाशना उनके लिए मुश्किल होने वाला था।

"तुम तो जानते ही हो सियाबोंगा गोरे हमेशा सही होते हैं, और काले हमेशा ग़लत! यह हमारी असलियत है।"

सियाबोंगा ने फिर सिर झुका लिया। वह परेशान था। काम से निकाले जाने की बात उसके दिमाग में घूमे जा रही थी।

"ख़ैर, कल के बाद...शायद हालात बदलें।"

वह मण्डेला की जद्दो-जहद की कहानी अच्छे से जानता था। पर उसे फिर-फिर सुन थकता भी नहीं था।

''चचा, फिर से सुनाइए ना। नैल्सन मण्डेला की कहानी सुनाइए ना।''

जोशुआ अपने दोनों हाथ सिर के पीछे बाँध, अपने बिछौने पर पसर गया।

''कल के बाद?'' कल के बाद क्यों?'' सियाबोंगा एक बार तो उलझन में पड़ गया। पर तब उसे याद आया। बेशक! नैल्सन मण्डेला, दक्षिण अफ्रीका के काले लोगों के नेता को अट्ठाइस बरस कैद रखने के बाद कल रिहा किया जाना था!

सियाबोंगा के दिल में उम्मीद उमड़ी। हालात शायद सचमें बेहतर हों। मण्डेला के आज़ाद होने के बाद कालों और गोरों के बीच का अलगाव शायद खत्म हो। शायद नए दक्षिण अफ्रीका में सबके साथ इन्साफ़ का बरताव हो।

अध्याय 3

बेटा सरदार का

"पता है नैल्सन मण्डेला कोई ऐरा-ग़ैरा लड़का नहीं था," जोशुआ ने कहना शुरू किया। "वह ट्रांसकाई में बसे कबीले के सरदार का बेटा था। उसका जन्म बहुत पहले 1918 में हुआ था। पर सरदार का बेटा होने के बावजूद वह वे सारे काम करता था जो गाँव के आम छोकरे करते हैं। जैसे ढ़ोरों और भेड़ों को चराना, खेतीबारी में मदद करना।"

सियाबोंगा की आँखें अचरज से फैल गईं। "मतलब सरदार का बेटा होने के बावजूद उसकी ज़िन्दग़ी ऐशो-आराम की नहीं थी!"

जोशुआ मुस्कुराया, पर तब संजीदा हो कहना जारी रखा। "जब नैल्सन बारह बरस का था उसके पिता बहुत बीमार पड़ गए। पर अपनी मौत के पहले उन्होंने सरदारों के सरदार से अपने बेटे की देखभाल करने को कहा। क्योंकि उन्हें अपने बेटे में नेतृत्व की खूबियाँ नज़र आईं थीं।"

“सरदारों के सरदार ने नैल्सन को पढ़ने के लिए मिशन स्कूल भेजा। वहाँ नैल्सन को पहली बार अहसास हुआ कि दक्षिण अफ्रीका में सारी ताकत तो गोरों के पास है।

“स्कूल की क़िताबें सिर्फ गोरे लोगों को हीरो के रूप में बखानतीं, और कालों को कुछ यों जताया जाता मानो वे ऐसे बच्चे हों जिन्हें सभ्य और तहज़ीबदार बनाने की ज़रूरत हो। नैल्सन ने जाना कि डच और ब्रिटिश लोग सतरहवीं सदी में यूरोप से अफ्रीका आए। उन्होंने काले कबीलों को हराया मुल्क को हथिया लिया और राज करने लगे।

“समय के साथ गोरी सरकार सख़्त होती चली। सरकार ने ऐसे कानून गढ़े जिससे काले लोग सिर्फ़ मज़दूर और चाकर बने रहें। हमें अपने ही देश में आज़ादी से आने-जाने की इजाज़त नहीं थी। हमें कबीलों के हिसाब से अपने-अपने होमलैण्ड (इलाकों) में रहने को मजबूर किया गया।”

“यह कानून तो अब भी है ना, चचा?” सियाबोंगा ने टोक कर पूछा।

“हाँ पर उम्मीद है कि ऐसा बहुत लम्बे समय तक नहीं रहेगा,” चाचा जोशुआ ने बात जारी रखने के पहले कहा।

“हालाँकि नैल्सन क़िताबों में लिखी बातों से इत्तफ़ाक नहीं रखते थे, पढ़ाई में वे अच्छे थे। सो स्कूली पढ़ाई पूरी करने के बाद वे आगे पढ़ने फोर्ट हैर गए। इस समय तक वे हालात बदलने के बारे में सोचने लगे थे। सो जल्द ही मण्डेला ने उन स्थितियों का विरोध किया जिनमें विश्वविद्यालय में काले छात्र रहने को मजबूर थे। ज़ाहिर था वे परेशानी में फंस गए।

“जब वे घर लौटे, सरदारों के सरदार उनसे नाराज़ हुए। उन्होंने हुक्म दिया कि नैल्सन विरोध करना बन्द करें। और तब उनकी शादी तय कर दी। नैल्सन वहाँ से जोहानसबर्ग भाग गए, ताकि उस बड़े शहर में वे खो जाएं।”

मुखिया की हुक्मउदूली की बात सुन सियाबोंगा का मुँह फटा रह गया। ''अरे फिर तो वे भारी मुसीबत में फंसे होंगे,'' उसने उसांस छोड़ कहा।

''बिलकुल,'' जोशुआ ने जवाब दिया। ''सरदारों के सरदार बेहद ख़फ़ा हुए। पर नैल्सन उन चीज़ों में धकेले नहीं जाना चाहते थे जिनसे वे इत्तफ़ाक नहीं रखते थे। और वे यह भी तो नहीं जानते थे कि यह तो उनकी मुसीबतों की शुरुआत भर थी...

''सभी दक्षिण अफ्रीकियों की तरह नैल्सन को भी काम करने के लिए, बस्तियों में रहने के लिए, सफ़र करने के लिए, सरकारी इजाज़त चाहिए थी। 'पास कानून' यही कहता था। इस वजह से ज़िन्दगी आसान नहीं थी। मण्डेला लम्बे और तगड़े थे, सो उन्हें एक सोने की खदान में पहरेदार का काम मिला। उस समय वे हमारी ही बस्ती में यानी एलैक्ज़ैन्ड्रा में रहते थे। वहीं उनकी मुलाकात वॉल्टर सिसुलू से हुई, जो ज़िन्दगी भर उनके दोस्त बने रहे। सिसुलू ने नैल्सन को समझाया कि उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखनी चाहिए।''

अध्याय 4

मुकदमा

सियाबोंगा ने अपनी आँखें मलीं। वह थक चुका था, पर उसे अपने 'हीरो' के बारे में और सुनना था। "उनकी जद्दो-जहद के बारे में भी बताइए न चचा," उसने बेताबी से पूछा। "आख़िर वे हमारे नेता कैसे बने?"

जोशुआ थके थे लेकिन वो चाहते थे कि उनका भतीजा सच को समझे। बुज़ुर्ग जोशुआ ने टीन के मग से पानी पिया। फिर उन्होंने अपना गला साफ किया और बोलना शुरू किया।

"नैल्सन वकील बन चैन से बैठ नहीं गए। अपने एक छात्र दोस्त ऑलिवर थाम्बो के साथ वे अफ्रीकन नैशनल कांग्रेस (एएनसी) से जुड़े। एएनसी अफ्रीका में कालों के साथ बेहतर सुलूक के लिए लड़ रही थी। हमारी ज़िन्दगियाँ बद से बदतर बनती जा रही थीं। ऐसे मुश्किल दौर में मण्डेला हमारे नेता बन उभरे। सरकार गोरों और कालों को पूरी तरह अलग-थलग कर रही थी। इस अलगाव को 'अपार्थाइड' यानी रंगभेद कहा जाता है।

“नैल्सन और एएनसी के दूसरे नेताओं को *अपार्थाइड* से नफ़रत थी, क्योंकि इसका मतलब था कि काले लोग कुछ इलाकों में रह नहीं सकते थे, वे मत नहीं दे सकते थे, अपने बच्चों को उन स्कूलों में नहीं पढ़ा सकते थे जहाँ गोरे बच्चे पढ़ते थे। वे उनकी दुकानों में ख़रीददारी नहीं कर सकते थे, यहाँ तक कि बाग-बगीचों में उसी बैंच पर बैठ तक नहीं सकते थे।

“नैल्सन और दूसरे नेताओं ने कई प्रदर्शन किए, खास तौर से ‘पास कानून’ के ख़िलाफ़। जोहानसबर्ग में नैल्सन ने एक ऐसी बैठक में भाषण दिया जो रात 11 बजे के बाद तक, यानी कर्फ्यू के बाद भी चली थी। वहाँ से निकलते ही सारे भागीदारों को गिरफ्तार कर लिया गया।

''जब पुलिस उन्हें गाड़ियों में ठूंस, जेल ले जा रही थी वे पूरे जोश से आज़ादी का तराना, 'निकोसी सिकलेली आफ्रीका' (ईश्वर अफ्रीका को आशीष दे) गा रहे थे। अगले चार महीनों में 8,500 से भी ज़्यादा स्वयंसेवक जेल गए। इनमें कुछ गोरे भी थे जो सरकार की नीतियों के विरोधी थे। एएनसी के लिए इन गिरफ्तारियों ने प्रचार का काम किया। हज़ारों लोग एएनसी से जुड़े।

''पर अब पुलिस नैल्सन पर कड़ी नज़र रखने लगी,'' जोशुआ ने भौं सिकोड़ याद करते हुए बताया। पहले तो नैल्सन पर पाबन्दी लगाई गई, कहा गया कि वे आम जनता के सामने किसी बैठक में भाग नहीं ले सकते थे। उन्हें एक बार में सिर्फ़ एक ही व्यक्ति से मिलने की इजाज़त थी।

''तब 5 दिसम्बर 1956 की भोर नैल्सन के दरवाज़े पर दस्तक हुई।

''माक ऊप! (खोलो, पुलिस!)

''समूचे दक्षिण अफ्रीका में सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को, जिनमें काले और गोरे दोनों थे, गिरफ्तार किया जा रहा था। इनमें से 150 पर, जिसमें एएनसी के नेता भी थे, राजद्रोह का अरोप लगाया गया। इसकी सज़ा थी फांसी।

''जब जोहानसबर्ग में मुकदमा शुरू हुआ, सड़कों पर आज़ादी का तराना गाया जा रहा था। सरकार ने मुकदमे पर ठीक से सोच-विचार नहीं किया था। सो नैल्सन और दूसरे कैदियों को जमानत पर रिहा कर दिया गया।''

''इसका क्या मतलब?'' सियाबोंगा ने जानना चाहा।

''मतलब यह था कि मुकदमे के दौरान नैल्सन को कैद में नहीं रहना पड़ा, वे घर में रह सके,'' चचा जोशुआ ने समझाया।

''इसलिए अदालत में हाज़िर होने के अलावा वे बाकी समय एएनसी का काम जारी रख सके। नैल्सन ने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया कि वे गोरों के ख़िलाफ़ नहीं हैं, वे कानूनी नाइन्साफ़ी के ख़िलाफ़ हैं। उन्होंने यह भी ऐलान किया कि उनका विरोध अहिंसक और शांतिपूर्ण होगा।''

अध्याय 5

भगोड़ा

जेशुआ ने अपने दुखते कंधे लोहे के पलंग पर टिकाए। उनकी कहानी खत्म होने ही वाली थी।

‘‘मुकदमा चार सालों तक चला। इस दौरान अफ्रीका के बाहर की दुनिया मण्डेला और एएनसी के दूसरे नेताओं बारे में जान चुकी थी। फरवरी 1960 में ब्रितानी प्रधान मंत्री हैरल्ड मैकमिलन दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर आए। उन्होंने जो कहा उसने गोरों को चौंका दिया। वे बोले, ‘समूचे अफ्रीका में बदलाव की हवा बह रही है।’

‘‘इसके कुछ ही सप्ताह बाद शार्पविल में, जो जोहानसबर्ग के दक्षिण में बसी एक झोंपड़पट्टी थी, पुलिस ने कालों की भीड़ पर गोलियाँ चला दीं। ये लोग शांतिपूर्ण तरीके से ‘पास कानून’ का विरोध कर रहे थे। यह हमारे समुदाय के लिए एक भयानक दिन था। उनहत्तर लोग मारे गए और तकरीबन दो सौ घायल हुए। इनमें कई औरतें और बच्चे भी शामिल थे। अगले दिन दुनिया भर के अख़बारों में अपने बच्चों की लाशें उठाए माता-पिता की तस्वीरें छपीं।

‘‘साढ़े चार बरस बाद 29 मार्च 1961 के दिन मण्डेला दूसरे आरोपियों के साथ कटघरे में थे।

‘‘हाकिम ने फ़ैसला सुनाया, ‘आप कसूरवार नहीं आपको बरी किया जाता है।’

‘‘वे एक-दूसरे को हैरत से देखते रहे, तब मुस्कुराए और अदालत से निकल गए।

‘‘पर यह खुशी ज़यादा देर टिकी नहीं। सरकार ने एएनसी को गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया। पर इससे मण्डेला कब रुकने वाले थे। वे भूमिगत हो गए, भेष बदला और कानून के दायरे के बाहर खुफ़िया तरीके से काम करने लगे।

‘‘सतरह महीनों तक लुकछिप कर रहने के बाद 5 अगस्त 1962 को वे पकड़े गए।

‘‘इस बार अपना फ़ैसला सुनाने के पहले हाक़िम ने मण्डेला को बोलने की इजाज़त दी। नैल्सन चार घंटों तक बोले। उन्होंने उस सबका ख़ुलासा किया जिस पर उन्हें यक़ीन था। उनके शब्द दुनिया भर में गूँजे। उन्होंने जो कहा वह मुझे आज तक याद है।

‘‘गोरे लोग अफ्रीकियों को अलग ही किस्म की नस्ल समझते हैं। वे उन्हें ऐसे लोगों की तरह नहीं देखते जिनके अपने परिवार हैं, उन्हें यह अहसास ही नहीं होता कि उनके जज़्बात भी होते हैं; कि वे भी अपनी बीबियों और बच्चों के साथ रहना चाहते हैं; वे इतना कमाना चाहते हैं कि परिवार को पाल सकें, उनको रोटी, कपड़ा मकान मुहैय्या करवा सकें; अपने बच्चों को पढ़ने स्कूल भेज सकें। कौन सा ‘हाउस बॉय’ (घरेलू नौकर) या ‘गार्डन बॉय’ (माली) यह कर पाने की उम्मीद कर सकता है?

‘‘पर हाक़िम पर इस सबका कोई असर नहीं हुआ। नैल्सन को ताउम्र कैद की सज़ा सुनाई गई।

‘‘वे अगले उट्ठाइस बरस तक कैद रहे। उनकी पत्नी और बच्चे तक उनसे बिरले ही मिल पाते थे। पर दक्षिण अफ्रीका और दुनिया ने नैल्सन को नहीं बिसराया। हमारे मुल्क की तमाम बस्तियों में दंगे भड़के। पुलिस और सेना बुलाई गई। प्रदर्शनकारियों पर बन्दूकें दागी गईं। विरोध करने वालों को गिरफ्तार किया गया। सब जगह लोगों ने मण्डेला से प्रेरणा ली। इधर दूसरे मुल्कों ने दक्षिण अफ्रीका में बनी चीज़ों और यहाँ की खेल टीमों का बहिष्कार किया। इससे हमारा मुल्क बाकी दुनिया से कट गया। 1980 के दशक तक आते-आते दक्षिण अफ्रीका की सरकार को समझ आ गया कि या तो उन्हें मण्डेला को रिहा करना होगा या फिर तबाही का सामना करना पड़ेगा।

"और कल सियाबोंगा," चाचा ने फ़क्र से बात खत्म करते कहा, "वह दिन है जिसका हम सब एक अर्से से इन्तज़ार करते रहे हैं!"

थके सियाबोंगा ने अंगड़ाई ली।

कल, उसने मन ही मन सोचा...कल... क्या कल कुछ बेहतर होगा? उसे तो डॉ. होप का सामना करना था। क्या पता कल वह खुद और चाचा दोनों ही अपने काम से हाथ धो बैठें?

अध्याय 6

वे सारे गुज़रे हुए कल

"आओ सियाबोंगा! चले आओ!"

क्रिस उत्तेजना में अपने हाथ हवा में लहरा रहा था।

सियाबोंगा का तो दिल ही बैठ गया। उसके शरीर पर मानो कांटे चुभने लगे। वह अपने परिवार को किस तरह बताएगा कि उसने अपना काम कैसे खो दिया?

"अन्दर जाओ। मेरे डैड सामने वाली बैठक में हैं," क्रिस ने सियाबोंगा को धकियाते हुए कहा। वह एक अदना से गार्डन बॉय था, उसे घर में बुलाया थोड़े ना जाता था। उसने पैरपोंछ पर पैर साफ़ किए और अचकचाता-सा आगे चल दिया।

बैठक में पहुँच उसने देखा कि एक कोने में टेलिविज़न चालू था। परदे पर लोगों की भीड़ नज़र आई जो दो लोगों को एक लम्बी, गर्द भरी सड़क पर बढ़ते देख रहे थे।

डॉ. होप अनमने से सियाबोंगा की ओर मुड़े। "ये नैल्सन मण्डेला और उनकी पत्नी विनी हैं।"

तब उन्होंने अपने ख़यालों को तरतीबवार किया और सीधे सियाबोंगा की ओर देखा। "कल के बारे में। माफ़ करना, मैं नाराज़ हो गया था। क्रिस ने मुझे बताया कि दरअसल हुआ क्या था। मैं चाहता हूँ कि तुम यहीं रहो और काम करते रहो।"

टीवी के परदे पर नैल्सन मण्डेला कैदख़ाने के दरवाज़े तक पहुँचे। भीड़ ने आज़ादी का तराना 'निकोसी सिकलेली आफ्रीका' गा उनका स्वागत किया।

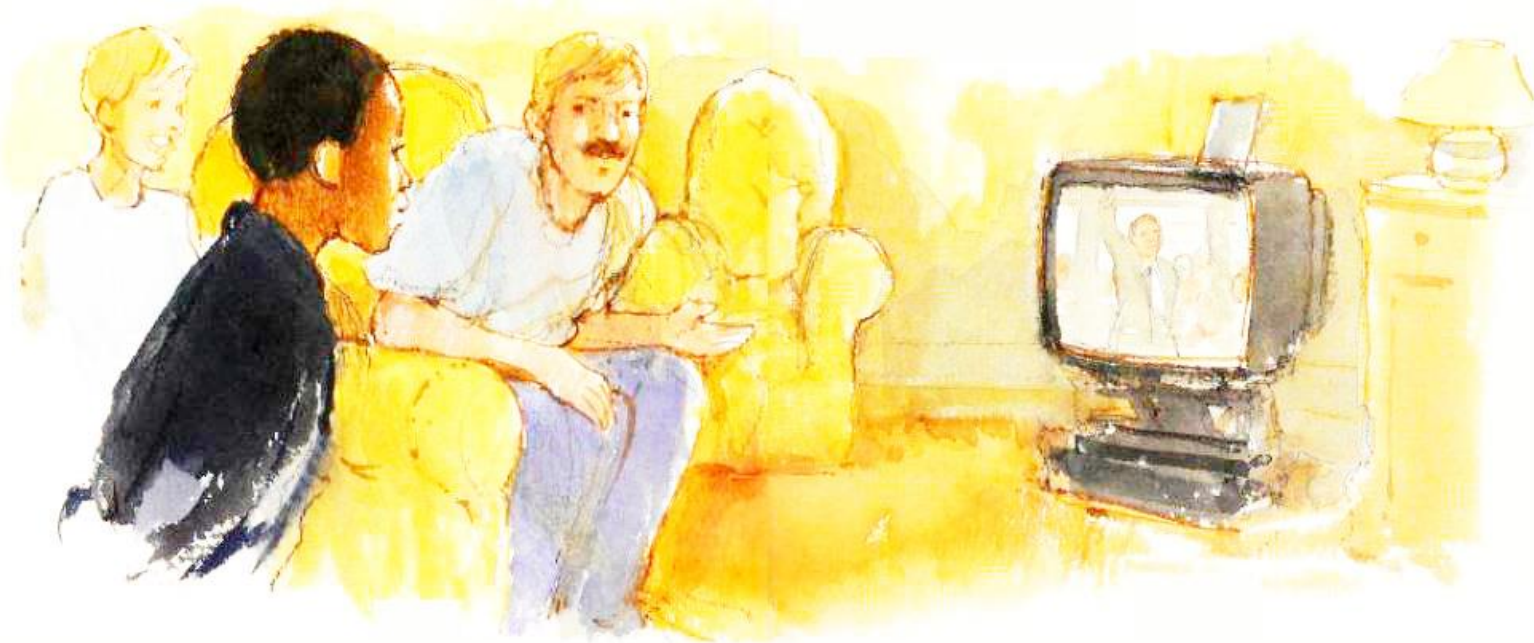

डॉ. होप अब सियाबोंगा से नहीं मानो खुद से ही कह उठे, "सारे गुज़रे हुए कलों के लिए, मैं सारे बीते कलों के लिए माफ़ी चाहता हूँ।"

सियाबोंगा परदे को घूरता रहा। अट्ठाइस साल कैद में गुज़ारने के बाद नैल्सन बूढ़े हो चुके थे। सियाबोंगा ने एक जोशीले जवान योद्धा को देखने की उम्मीद की थी।

पर तमाम तकलीफें झेलने के वाबजूद मण्डेला मुस्कुरा रहे थे। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि उन्हें रिहा कर दिया गया था। बल्की इसलिए क्योंकि उन्हें अहसास हो चुका था कि यह बदलाव की शुरुआत है। वह बदलाव जिसके लिए वे ताउम्र जूझे थे।

अध्याय 7

नया दक्षिण अफ्रीका

11 फरवरी 1990 की इतवार को, नैल्सन मण्डेला कैदखाने से निकले थे। वे उस वक़्त इकहत्तर बरस के हो चुके थे, पर फिर भी चुस्त-दुरुस्त थे।

अगले कई महीनों तक उन्होंने राष्ट्रपति एफ.डब्ल्यू डि'क्लार्क से चर्चाएं कीं। तय रहा कि नई सरकार हरेक वयस्क के मत से चुनी जाएगी। *अपार्थाइड* खत्म किया गया। अप्रेल 1994 में दक्षिण अफ्रीका में पहली बार स्वतंत्र लोकतांत्रिक चुनाव हुए। और नैल्सन मण्डेला को नया राष्ट्रपति चुना गया।

दक्षिण अफ्रीका, फरवरी 1990: सियाबोंगा और उसके चाचा जोशुआ एक अमीर गोरे परिवार के लिए काम करते हैं। उन्हें समय से वेतन मिलता है, पर बदले में उन्हें घंटों मशक्कत करनी पड़ती है। रहने-सोने के लिए उनके पास एक खस्ताहाल टापरी है। सियाबोंगा को जहाँ तक याद है हालात न जाने कब से ऐसे ही रहे हैं। पर कल नैल्सन मण्डेला, काले समुदाय के महान नेता को, कैद से रिहा किया जाएगा। क्या आख़िरकार अब जाकर सियाबोंगा के लोगों को सचमें आज़ादी मिल सकेगी...